RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-03
March -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

प्रबंध वक्रता की दृष्टि से मानस की काव्य भाषा का निर्वचनात्मक विश्लेषण

डॉ. श्रवण कुमार

सहायक आचार्य (हिन्दी) III/2,विश्वविद्यालय आवास, सेक्टर–III, रेजीडेन्सी रोड़, रातानाडा, जोधपुर–342011

'ध्वनि सिद्धान्त' में निहित व्यंजना ही विश्व के सम्पूर्ण महाकाव्य का मूल है। धनंजय ने 10वीं सदी में इसे 'तात्पर्य' अर्थ में व्यंजित किया। कुन्तक ने इन्हें वक्रोक्ति अर्थ में, महिमभट्ट ने इन्हें अनुमान में, मम्मट एवं जयदेव ने महाकाव्य के प्रबन्ध का आधार ध्वनि ही माना। किन्तु जयदेव ने अलंकार के रूप में ध्वनि का प्रतिस्थापित किया। विश्वनाथ ने इस के अर्थ में ध्वनि को ही भेद मानकर महाकाव्य की रचनाधर्मिता को जीवित रखा। प्लेटो के अनुसार, 'कवि विक्षिप्त प्राणी है और उसका काव्य विक्षिप्त क्षणों की वाणी है। उसका 'विक्षिप्त' शब्द निस्सन्देह निन्दनीय अर्थ का द्योतक है फिर भी यह स्पष्ट है कि ये क्षण असामान्य ही होते हैं, जो प्रकारान्तर से उसकी काव्य निर्माण क्षमता, भारतीय शब्दावली में, प्रतिभा की ओर संकेत करते हैं। जो अभ्यास और व्युत्पत्ति के पर्याय माने जाते हैं।[i]

अरस्तू ने काव्य की सृजना का आधार 'अनुकरण' को माना है मनुष्य बाल्यावस्था से ही अनुकरण करता है इसी प्रवृत्ति से वह रचना कौशल में प्रवृत्त होता है।

वुडस्वर्थ– 'काव्य का जन्म शान्ति के क्षणों में स्मरण किये गये प्रबल मनोवेगों से होता है।'[ii]

कालरिज– 'काव्य का सृजन प्राकृतिक छटा से प्रसूत भावनाओं द्वारा स्वत्व से निरपेक्ष रहकर काव्य सृजन करता है।'

क्रोचे – 'अनुभूति के कुछ विशेष क्षणों की अभिव्यक्ति काव्य कलाओं की जननी है कवि मन में जगत् के संसर्ग से उत्पन्न अरूप झंकृतियों को रूपायित करने के लिए कवि काव्य कला का सृजन करता है।'

फ्रायड– काम कला को प्रेरणा मानकर वासना की तृप्ति के लिए तन्मय होने के लिए काव्य सृजन करता है। भारतीय रस सूत्र के आचार्य भरतमुनि ने भी 'ब्रह्मसूत्र' में इसी फ्रायड के कामसूत्र को अर्थात् वात्स्यायन के कामसूत्र को काव्य सृजन का आधार माना है –**'विभावानुभावाव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'**

कालिदास का काव्य सौन्दर्य विलास में डूबकर ही लेखनी का विराम है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक में कवि ने 'अंगूठी देकर शकुन्तला का विस्मरण करना' पूर्ण भोगविलास करके, भरत की माँ को प्रसूता करके, भरत को जंगल में भटकने के लिए छोड़ना मात्र रति सुख है।

'कुमारसंभवम्' में पार्वती दुःख और लज्जा के बीच इन्द्र (शिव) के क्रोध (काम) अग्नि के कारण शचि (पार्वती) अधोमुखी एवं लज्जा से लाल हो रही है। दोनों काव्य शाकुन्तलम् एवं कुमारसंभवम् में देव (राजा) का शाप से नायिका (नारी) पीड़ित है। यहाँ पर राजा का कामवासना उद्दाम होने के कारण शचि एवं पशुपाल के शकुन्त कन्या का भोग करके राजा इन्द्र एवं दुष्यन्त उन्हें भूल जाता है। इसलिए दोनों का मिल असंपूर्ण एवं असंपन्न रह गया है। कवि ने दुर्वासा का कल्पित शाप गढ़कर रूपक की व्यंजना की है। इसलिए उनका मिलन शापित है। बेचारी शचि (पार्वती) ने संपूर्ण जीवन **'इयेष सा कर्तुमबन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।'** अर्थात् उन्होंने तपस्या के द्वारा अपने रूप को सफल करने की इच्छा से जीवन को नहीं जिया, उन्होंने सम्पूर्ण जीवन कृच्छ्रसाधना (कष्टपूर्ण) पूर्वक जिया। जो उनके लिए रौरव नर्क था। इन्द्र (महादेव) द्वारा अपराधपूर्वक शचि से भोग किया था वह देवी के लिए दीर्घश्वसन उत्तप का विषय था –**'पूर्वापराधभीतस्य कालस्योच्छवसितं मनः।'** अतः दोनों काव्यों में 'कुमार' का जन्म, क्रमशः भरत एवं कार्तिकेय कामदेव एवं रति के कल्पना द्वारा व्यर्थप्रेम का आधार बनाकर काव्य सृजना की गयी है।

अर्थात् कालिदास के समाज में नारी के व्यक्तित्व को दबा दिया गया है। कालिदास के नायक बहुधा अनेक पत्नियों वाले हैं। दुष्यन्त ने शकुन्तला से ग्वाल (कृष्ण) जाति की लड़की से गन्धर्व विवाह किया है। उन्होंने पाणिग्रहण नहीं किया है विक्रमोर्वशीयं में विक्रम अर्थात् पुरुरवा (लव) और उर्वशी को देवदासी के रूप में अप्सरा की कल्पना करके विक्रम पदवी के जारशाही शासन में पुरुलव ने शादी का शाप दिया था। 'जिससे उर्वशी भी शापवश लता बन गयी थी।' उस समय ऋषियों का आतंक था वे जब चाहे किसी भी निषाद या भील या ग्वाल कन्याओं को शापित कर सकते थे। आज की पत्नी भी पूर्वजन्म में धीवर कन्या थी जिसे 'इन्दुमती' नाम दिया गया।

कालिदास ने आदर्शवादी कल्पना विलास द्वारा राजाओं के जीवनवृत्त को 'असमुद्रक्षितीज' ऊहात्मक वर्णन किया है। नारी को कालिदास ने पृथ्वी की तरह भोग्या माना है। पृथ्वी भोगने के लिए युद्ध करना चाहिए। राज्य प्राप्ति के बाद राजा का उद्देश्यमात्र भोगविलास है। वेश्यावृत्ति इस नागर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संस्कृति का अभिन्न अंग है। **'वेश्यास्त्वतो नखपदं सुखान् प्राप्य वर्षाग बिन्दु – नामोक्ष्यन्ते।'**

रामायण एवं महाभारत का युद्ध पूराकाल में अनार्यों के प्रतिकार के लिए था।

रघुवंश में प्रबंध वक्रता का प्रथम उदाहरण शंबुक वध (रघुवंश सर्ग – 15) में आता है जो कालिदास की नवीन स्थापना है। क्योंकि राम मूलतः कृष्णवर्णी है द्रविड़ है। 'राघव करुणः रसः।' कालिदास ने मूल कथा प्रबंध में नवीन उपस्थापन कर दिया है। 'राम' लोक है इन्द्र शास्त्र है। राम सामान्य जन है, इन्द्र विशिष्ट जन है। इन्द्र रैवन या शक्र है वह वैयाकरण है वह ऐन्द्र व्याकरण, इन्द्रजाल का रचयिता है। वह रावण है, वह संस्कृत का ज्ञाता है, राम नहीं।

कालिदास ने वक्रोक्ति व्यंजना द्वारा 'वाक्छल' से साधारण कथन का अतिक्रमण करके शंबुक (राम) या कृष्ण का वध इन्द्र से न करवा कर मूलकथानक वक्रोक्ति द्वारा दोषारोपण राम पर कर दिया क्योंकि राम का वर्ण कृष्ण है। इन्द्र (रैवन) का पीतवर्णी है। उस समय का युद्ध दो वर्ण कृष्णवर्ण एवं पीत वर्ण दो आर्य–अनार्य संस्कृति का युद्ध था।

कालिदास ने ऋक्वेद के वृत्तधारी राम, जो तपोनिष्ठ या उसको रघुवंश में राम का नवीन नाम शंबूक देकर राम को राम से मरवा दिया। सिर कटवा दिया। यह वाक्छल है। यही काव्य की प्रबंध वक्रता है।

प्रबंध वक्रता क्या है? मनुष्य के भावों एवं विचारों को सामान्य भाषा के स्थान पर विशेष सिद्धि के लिए विशिष्ट विच्छति, दबाकर, मूल को दबाकर नया कथन गढ़ना, नयी गल्प गढ़ना प्रोक्ति कथन, शैली भिन्नता, वाक्छल करना, इन्द्र द्वारा मय के घर में मूर्गा बन कर बांग देना (वाङ्मय), परिहास कथन, अग्निपुराण में इसे वाक्छल, यजुर्वेद में इसे 'इन्द्रजाल' 'धोखा–फरेब' भामह ने साधारण कथन का अतिक्रमण करके 'अतिशयोक्ति' कहा है। राजशेखर ने इसे 'अलौकिक वस्तु' कवि कर्म कहा है। आचार्य कुन्तक ने इसे कवियों का व्यापार माना है। कवि–शब्द व्यापार वक्रता द्वारा छः प्रकार से वक्रोक्ति भेद करता है आचार्य कुन्तक ने वे छः भेद इस प्रकार माने हैं – 1. वर्ण विन्यास वक्रता 2. पद–पूर्वार्द्ध वक्रता 3. पद–परार्द्ध वक्रता 4. वाक्य वक्रता 5. प्रकरण वक्रता 6. प्रबन्ध वक्रता।[iii]

वक्रोक्ति के छः भेद किये हैं तथा इनके प्रत्येक भेद के उपभेद होते हैं कवि वाक्छल द्वारा भाषा के माध्यम से लघूत्तम इकाई वर्ग से लेकर उसके सम्पूर्ण महाकाव्य या प्रबंध काव्य में नवीन स्थापना मूल को दबाकर विच्छत्ति पूर्ण ढंग से सौन्दर्य द्वारा लच्छेदार कथन से काव्य भाषा का वैचित्र्यपूर्ण उद्घाटन करता है –

कवि व्यापार–वक्रत्व प्रकाराः सम्भवन्ति षट्।
प्रत्येकं बहवो भेदास्तेषां विच्छति शोभिनः।।[iv]

कवि का मूल कथानक से कोई सरोकार नहीं होता है वह उसकी रचना में चित्त प्रसन्नता एवं वर्णो का लालित्य पर बल देता है। वह अनुप्रास एवं यमक–श्लेष का वक्रता पूर्ण प्रयोग करता है –

राधा– पशुपति कहाँ गयो सजनि?

पार्वती– यमुना तट धेनु चरा रह्यो रे। यहाँ विशिष्ट व्यंजना है।

पशुपति – मूलतः कृष्ण के लिए बाद में शिव के लिए नवीन स्थापना में शिव के लिए आया है किन्तु पार्वती ने उसका अर्थ ग्वाला, गड़रिया को लेकर कृष्ण के लिए कहा है वह तो यमुना तट पर गायें चरा रहा है। यहाँ कवि द्वारा वक्रोक्ति विधान का सृजन किया है। यहाँ पर रूढ़ि कथन मूल रूप कृष्ण वर्णी राम का विशेषण रूप (वर्ण) है जो उसका प्रकृति रूप काला वर्ण है उसी राम का वर्ण रूढ़ अर्थ में कृष्ण का वाचक हो गया, ग्वाल का पर्याय रूप, गोपाल हो गया, उपचार, विशेषण, संवृत्ति, वृत्ति, भाव, लिंग, क्रिया आदि के प्रयोग की विभिन्न विधियों द्वारा वक्रता प्रकृति एवं प्रत्यय द्वारा (पद पूर्वार्द्ध वक्रता) जिसे सुबन्त एवं तिङ्त पद रूप द्वारा मूल या रूढ़ पद में परिवर्तन किया जाता है जैसे – तुलसी ने मानस में सीता (इला) सब कष्ट सहने वाली है। रूढ़ शब्द 'इला' ऋग्वेद में है। कामायनी में इड़ा है, पृथ्वी पुत्री सीता भावरूढ़िता है –

'धरनिसुतां धीरजु धरेड समउ सुधरमु विचारि।'[v]

पर्याय वक्रता – मूलतः रूढ़ अर्थ प्राकृत रूप में राम को 'दशरत जातक बौद्ध कथा' में बुद्ध बताया गया है जो अनार्य है क्योंकि राम का वर्ण कृष्ण था आर्यों का रंग गौर वर्ण, था अतः प्राकृत रूप में राम–सामान्यजन था। महिपाल था। यहाँ महीपाल के स्थान पर तुलसीदास ने पर्याय वक्रता के रूप में 'कुशलवराऊ' पर्याय वक्रता के रूप में स्थापित किया है –

यह प्राकृत महिपाल सुभाउ।
जान सिरोमनि कोसलराऊ।[vi]

राम का रूप इन्द्र ने नील वर्ण पोतकर सादृश्य रूप (छल) धारण किया। जो रूप सादृश्य, इन्द्र ने गौतम क्रिया रूप स्नान आदि के समय मूर्गा बन कर बांग देना साधर्म्य साम्यता कर छल करना दो भिन्न नाम होते हुए भी 'राम' शब्द के स्थान पर सुबन्त स्वर्ण या सुन्दर रूप मृग मरिचि बनकर राम को इन्द्र द्वारा ठगना, एक ही नाम पर नवीन स्थापना करके राम (सूर्य) के स्थान पर चंद्र (इन्द्र) की स्थापना रामचंद्र करना अभीष्ट है।

रामायण का मूल रूप द्रविड़ परिवार से है इसलिए लोक में सामान्य जन में 'राम' प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्यय रूप है विशिष्ट जन 'राम' शब्द के बाद में लाल, चंद्र (इन्द्र) सिंह, मल यथा– रामलाल (लास्क वर्ण वाला राम) रामचंद्र (राम चंद्र वंश ठण्डे द्वीप वाला) रामसिंह (राम पर सिंह बनकर बैठना) राम

मल (मल रूपी राम) अर्थात् राम सामान्य जन तथा रामचंद्र विशिष्ट जन वाचक है।

श्री सी.राजगोपालाचार्य ने अपनी पुस्तक 'सम्राट का पुत्र' 'राम को केवल साधारण मनुष्य माना है। तथा मध्य श्रेणी के मनुष्य से हीन माना है।'[vii]

'रामायण की मूल कथा 'स्कन्द पुराण' से ली गई है।' अपपप राम का तिलकोत्सव में वक्रोक्ति विधान छलपूर्वक 'भरत' (नवीन रामचंद्र) को वरदान देकर देता है तथा प्राचीन राम को शाप की कल्पना गढ़ता है।

ध्यान रहे रावण पण्डित है, ब्राह्मण है, विशिष्ट भाषा भाषी है वह यक्ष है वह देवता है, रावण ही इन्द्रजाल का प्रस्तोता है वही नवीन रामचंद्र अवतारूप में आकर वेश नव अर्थात् विष्णु का नया अवतार का छद्म अवतार धारण करके वैशवती रामचंद्र बनता है वही दस रूप अवतार है। अर्थात् वह नाटक या काव्य में दस रूप धारण करता है। एक रूप, द्विज रूप, त्रिरूप (त्रिसिरा), चतुर्मुख (ब्रह्मा) पंचानन, षडानन, सप्तनेय (जैन मुनि), अष्टरूप (अष्टावक्र) नवरूप (शक्ति जाति), दशरूप (इन्द्र या रेवन) ये सभी रूपक आर्यों में छद्म रूप, मास्क रूप लगाकर, वाक्छल, रूप बदलकर मृग मरिचि, नरसिंह भेड़िया एवं यक्षप (कच्छप) विविध रूपकों द्वारा प्रकरण एवं प्रबंध को व्यंजना द्वारा सृजित किया जाता है। महाभारत का प्रारम्भ भी – 'यर्वाण, तुर्वाण ऋषयः बभूव' से किया गया है अर्थात् यवन एवं तूर्फान आर्य जातियाँ ही भारत में ऋषि (रूसी मूल स्थान) के रूप में स्थापित हुई थी। रामायण के प्रारम्भ में लिखा है कि यह प्रबंध कथा में जिज्ञासा स्वरूप लिख रहा हूँ – 'अथौतो पुरुष जिज्ञासा' अतः प्रबंध का आधार कल्पना प्रवणता है।

ऋक् वेद में राम के लिए वृत्र, मेघ, असुर, नग (पहाड़), नाग, हाथी एवं बलि कई अर्थों में आया है।

अतः राम प्रतीक रूप में भूमि है, भाव भूमि है, सीता हल की रेखा है, लक्ष्मण शेष नाग जाति है, हनुमान झंझावत है तथा इन्द्र (रावण) बीज बोने वाला है– 'सीता अग्नि में नहीं जली किन्तु राम जल में जल गये।' मूल राम की संवेदना है। इन्द्र ने छद्म रूप में कच्छप (यक्ष) का रूप धारण करके रसी बनायी नाग द्रविड़ जाति ने अपने जीवन को सामसिक वक्रता से आदर्धमयी बनाया –

जौ छवि सुधा पयोनिधि होई परम रूपमय कच्छपु सोई।
सोभारजुमदरु सिंगारु। मथै पानि पंकज निज मारू।।[ix]

अतः प्रबंध को चमत्कृत करने के लिए प्रबंधचारुता के लिए नवीन उत्पाद्य अतिरंजना, रोचक प्रकरण, अवान्तर कथा, सामान्य कथा के स्थान पर विशेष कथा का आग्रह आदि के माध्यम से कवि अपनी प्रतिभा एवं प्रबंध वक्रता का प्रयोग एक ही 'राम' को लेकर ऋक्वेद, स्कन्दपुराण, पौलुत्स्य रामायण, वाल्मीकि रामायण, दशरथ जातक, रघवंश, कुमार संभवम्, किरातार्जुनीय, कामायनी, साकेत एवं यशोधरा में पूर्वापर अन्विति के कारण प्रोक्ति विचलन द्वारा प्रबंध कौशल (प्रकरण वक्रता) द्वारा अतिशयोक्ति मुद्राराक्षस, मेघदूत, मायापुष्पक, कृत्या–रावण एवं मृच्छकटिक, हयग्रीववध, शिशुपालवध एवं पाण्डवाभ्युदय अर्थात् पीले वर्णी आर्य जाति का अभ्युदय के रूप में नवीन प्रबंध का उपस्थापन किया है। मुद्राराक्षस में मुद्रा (अंगूठी) के द्वारा राक्षस पकड़ा गया की नवीन कल्पना की गयी है। यह नामकरण प्रकृति नाम तथा काल्पनिक नाम द्वारा सृजित है। आर्य नाम कल्पित नामकरण करते हैं अनार्य प्रकृतिस्थ नामकरण निकालते हैं। यही इनकी कथा– गाथा – काण्ड, गप्प, गल्प एवं जल्पक बनकर विविध रूप लेती है – राम बौद्ध धारा की मूल प्रकृति हैं 'रामीय ग्राम', 'कोलीय ग्राम', मेघ आदि नाम राम के गुणी, वृत्ती एवं दृढ़ी होने के प्रमाण है तथा यह आर्यों के आने से पूर्व की धारा है। जिसे हीन, दास बनाया गया। दूसरी वज्रयान धारा जो प्रच्छन्न बौद्ध बनकर नकाब (रूप) पहन कर आयी वही हिन्दू धारा के रूप में महायानी कर लायी यह राम का ऐतिहासिक निर्वचन है। राम मूल है, किन्तु उसे रूढ़ बना दिया। रामचंद्र शब्द राम चंद्रमा जैसा नवीन कल्पना है। राम को गुणी होने के कारण बुद्ध बना दिया किन्तु बौद्ध निवृत्ति मार्ग के स्थान पर नवीन कल्पना विष्णु या इन्द्र को शक्र सिंह या शाख्य सिंह की कल्पना करके उपस्थापन कर दिया तथा मूल को हटा दिया। केशरी या के हरी इन्द्र का ही वाचक है। अतः राम का काव्य राम नाम सत का प्रथम अध्याय है तथा दूसरी धारा रूपक, कल्पना, अतिशयोक्ति द्वारा स्थापना की गई है। अतः राम को गुणी होने से बुद्ध, काला होने से गुणवाचक विशेषण कृष्ण (मेघ), वाचक बना तथा उच्च एवं नीच, कृष्ण एवं गौर (गौड़), असुर एवं देव, हीनयान एवं महायानी, आर्य एवं अनार्य, पाश्चात्य शैली में नवीन स्थापना कैथोलिक एवं प्रोटेस्ट द्वारा मूल 'राम' शब्द बहुत पीछे छूट गया। यही राम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। तुलसी का राम 'शक आर्य' है –

'अवधेय के बालक 'सकारे' गयी
कहीं गोद के भूपति ले निकसी।' (बालकाण्ड)

यहाँ 'सकारे' शब्द 'शकआर्य' शब्द का संकुचन किया गया है तथा श्लेष द्वारा 'स काले' की व्यंजना भी की गयी है।

अतः दास एवं नाथ रूप में आदि कालीन संस्कृति की दो धाराएँ हैं। इस दो अमिट जातीय वैमनस्य की खायी को पाटना नामुमकीन है। यह काव्य कल्पना प्रसूत, ऊहात्मक, आलंकारिक, रूपकों द्वारा मेघ (कृष्ण) वध, शेष नाग जाति का पतन है, बौद्ध संस्कृति का निष्कासन है। अनुकूल एवं प्रतिकूल रूप में 'विमर्श सन्धि' है। मानस का काव्य नाट्य वक्रता के रूप में चित्रित किया गया है राम के स्थान पर भीषण राम, दुधर्ष राम अर्थात् विकराल भीषण राम (वि–भीषण) की प्रतिस्थापना है जो त्रिपुण्डधारक है। तुलसी उत्तरकाण्ड में राम को 'काक भुशुण्डी' जैसे जातीय, कृष्ण वर्णीय वर्ण की व्यंजना है, वाक्छल है। इन्द्र पोलुत्स्य ग्रीक लोमस रूपी द्वारा कृष्ण

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भुशुण्डी के बौद्ध ज्ञान धारा पर व्यंग्य रूप में व्यंजित किया है उस ज्ञान धारा को चाण्डाल पक्षी काकवर्णी को शापित करके नरक, दास, शूद्र के रूप में चित्रित किया है। यही 'प्रबंध वक्रता' की सुसंश्लिष्टता से सम्बद्ध है तथा अविद्यमान की कल्पना तथा विद्यमान का संशोधन मूल कथा के साथ किया गया है।

संदर्भः–

i भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी, अलंकार प्रकाशन 3611 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–अक्टूबर 1999, पृ.सं. 19

ii भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी, वही, पृ.सं. 21

iii माघ में वक्रोक्ति – डॉ. जयप्रकाश नारायण, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली ैठछ.81.86700.70.6 संस्करण–2006, पृ.सं. 86

iv वक्रोक्तिजीवितम् – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी, सुरभि पब्लिकेशन्स, उदयपुर, नवीन संस्करण, पृ.सं. 20

v श्री रामचरितमानस् (अयोध्याकाण्ड), हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण संवत् 2074, पृ.सं. 533

vi श्रीरामचरितमानस – बालकाण्ड हनुमानप्रसाद पोद्दार, वही, पृ.सं. 28

vii सच्ची रामायण की चाबी – पेरियार रामास्वामी नायकर डॉ. अम्बेडकर प्रचार समिति, मोती कटरा, आगरा संस्करण 25 मई 2013, पृ.सं. 52

viii सच्ची रामायण की चाबी – पेरियार रामास्वामी नायकर, वहीं, पृ.सं. 51

ix श्री रामचरितमानस् बालकाण्ड – हनुमान प्रसाद पोद्दार, वहीं, पृ.सं. 211

RRIJM 2015, All Rights Reserved